International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 24-06-2019; Accepted: 25-07-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 5; September 2019; Page No. 50-51

पृथक पर्वतीय राज्य उत्तराखंड" आंदोलन में महिलाओं की राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता का विश्लेषण

डॉ० राजकुमारी भंडारी चौहान
असिस्टेंट प्रोफेसर, वी०श०के०चं, गवर्नमेंट (पीजी) कॉलेज, डाकपत्थर, विकासनगर, देहरादून, उत्तराखंड, भारत

प्रस्तावना

किसी भी लोकतांत्रिक समाज में एक संगठित राजनीतिक व्यवस्था होती है, जिस कारण नागरिकों को उस व्यवस्था की जानकारी होना आवश्यक हो जाता है और शायद तभी जनता राजनीतिक दृष्टि से जागरूक हो सकती है। राजनीतिक जागरूकता से सामान्य जनता को शासन के स्वरूप, संगठन एवं उसके क्रियाकलापों की जानकारी होती है, अतः शासकीय गतिविधियों को समझने के लिए उनका जागरूक होना अति आवश्यक है। जब जनता राजनीतिक दृष्टि से जागरूक होगी तो स्वतः ही वह देश की राजनीति में सहभागी बनेगी। वहीं अगर उत्तराखंड की महिलाओं की बात करें तो उनमें ऊर्जा, कौशल, ज्ञान एवं प्रबंधकीय क्षमता जबरदस्त है। अतः राजनीतिक सहभागिता को उत्तराखंड में रह रही उस आधी आबादी के परिपेक्ष में देखना आवश्यक हो जाता है जो इस लोकतंत्र की व्यवस्था में रहते हुए भी अपने आप को उपेक्षित महसूस कर रही थी और अंततः अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए उसे उत्तराखंड राज्य आंदोलन जैसे अविस्मरणीय आंदोलन के पक्ष में खड़ा होना पड़ा। अब सवाल उठता है कि उत्तराखंड राज्य की मांग के समर्थन में महिलाओं का इतना बड़ा सैलाब शायद पहली बार सड़कों पर उतरा होगा परंतु उनका सड़कों पर उतरना क्या राजनीतिक जागृति का हिस्सा था या मात्रा परिस्थिति जनक सहभागिता का परिणाम। इसे समझना आवश्यक हो जाता है, परन्तु इससे पूर्व राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता को समझना आवश्यक है।

राजनीतिक जागृति- प्राचीन काल में राजनीतिक व्यवस्था साधारण थी, धार्मिक नेता को उस समय ईश्वर का प्रतिनिधि समझा जाता था और उसके शब्द कानून माने जाते थे। उस समय संविधान की आवश्यकता नहीं समझी जाती थी, इसलिए राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक ज्ञान न तो विस्तृत था और ना ही उसकी अधिक आवश्यकता थी, किंतु जैसे जैसे राजनीतिक व्यवस्था का स्वरूप जटिल होता गया वैसे-वैसे राजनीतिक जागरूकता तथा राजनीतिक ज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व बढ़ा। आधुनिक समय में सामान्य जनता के लिए राजनीतिक जागरूकता इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा उसे शासन के स्वरूप, संगठन, कार्यकलापों तथा शासन के अवयवों की जानकारी होती है। राजनीतिक जागरूकता आदर्श नागरिकता का प्रमुख गुण है, क्योंकि जनता शासन तथा उसके कार्यों के बारे में जितनी परिचित होगी शासन उतना ही सुदृढ़ होगा। राजनीतिक जागरूकता किसी भी समुदाय का वह विशेष गुण है जो उस समुदाय के सदस्यों के राजनीतिक दृष्टिकोण हो एवं राजनीतिक रुझानों को अर्थ पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। राजनीतिक जागरूकता राजनीतिक व्यवस्था को समझने की एक मूल अवधारणा है। व्यक्ति को सामाजिक परिवेश में होने वाले ध्रुवीकरण के विषय में जानकारी का व्यापक स्वरूप ही जागरूकता है, एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में नागरिकों को अपने राष्ट्र, राजनीतिक व्यवस्था, इतिहास, राजनीतिक संरचना, पद धारको, नागरिक कर्तव्य एवं अधिकारों, राजनीतिक स्तंभों की महत्ता तथा नागरिक रोल का ज्ञान होना चाहिए जिससे नागरिकों में गतिशीलता बनी रहे। सरकार नागरिक इच्छाओं के अनुरूप निर्णय लें इसके लिए उसे बोध कराना भी राजनीतिक जागरूकता की श्रेणी में आता है। वास्तव में राजनीतिक जागरूकता सभी प्रकार की राजनीतिक व्यवस्थाओं के लिए अनिवार्य तत्व है लोकतांत्रिक प्रणाली का तो बुनियादी आधार ही जागरूकता है।

राजनीतिक सहभागिता- सर्वसत्तावादी राजनीतिक व्यवस्था हो या उदारवादी राजनीतिक व्यवस्था, प्रतिक्रियावादी राजनीतिक व्यवस्था हो या फिर लोकतंत्र वादी राजनीतिक व्यवस्था, इन सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं में किसी न किसी रूप में नागरिकों को राजनीति में भाग लेने का अधिकार होता है। भारत जैसे संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि लोकतांत्रिक शासन प्रणाली, तंत्र संचालन व्यवस्था में जनता को सहभागी बनाता है यही वस्तुतः राजनीतिक सहभागिता है। हण्टर के अनुसार सहभागिता का अर्थ व्यक्तियों का नवीन कार्यक्रमों के निर्धारण में मुख्य निर्णायक होना है जबकि मौलिक का कथन है कि सहभागिता का तात्पर्य व्यक्तियों को संपूर्ण सामाजिक विकास में संलग्न करना होता है। राजनीतिक सहभागिता आधुनिक राजनीति की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं के लिए यह एक अनिवार्य तत्व रही है। आधुनिक लोकतंत्रीय व्यवस्था की तो आधारशिला ही सहभागिता है। चुनावों में मत देना, प्रभावक समूहों का सदस्य बन कर समर्थन प्रदान करना, विधायकों से प्रत्यक्ष संवाद करना, राजनीतिक दलों की गतिविधियों में भागीदारी करना एवं वैधानिक अधिकारों को प्राप्त करना तथा नागरिक मंच एवं संवाद से राजनीतिक विचारों का अभ्यासिक प्रचार करना बुडवर्ड तथा रोपर द्वारा राजनीतिक सहभागिता की यह पांच प्रमुख क्रियाएं बतलाई गई है अतः कहा जा सकता है कि नागरिकों के वे कार्य जो राजनीतिक व्यवस्था की प्रक्रिया को प्रभावित करें राजनीतिक सहभागिता कहलाता है।

परंतु उत्तराखंड में महिलाओं द्वारा रचा गया उत्तराखंड राज्य आंदोलन राजनीतिक जागरूकता का ही एक हिस्सा था यह कहना उचित ना होगा क्योंकि आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले व्यक्ति तथा सामान्य व्यक्ति में काफी अंतर होता है। किसी भी आंदोलन में भाग लेते समय व्यक्ति को एक बहुत बड़ा जोखिम उठाना पड़ता है। अतः वह जोखिम उठाने के लिए पूर्ण रुप से तैयार होता है। वस्तुतः एक आंदोलन में भाग लेने वाला व्यक्ति क्षेत्र के अन्य सभी आंदोलनों में भाग ले यह आवश्यक नहीं है, क्योंकि आंदोलन में उसकी सहभागिता उसकी विचारधारा के अनुरूप होती है। यह जरूरी नहीं है कि जो व्यक्ति आंदोलन में अपनी सहभागिता कर रहा है वह राजनीतिक रूप से जागरूक भी हो उसकी सहभागिता परिस्थिति वश भी हो सकती है, जैसा कि उत्तराखंड आंदोलन में देखने को मिला। इस आंदोलन को संचालित करने वाले आधी से ज्यादा महिलाएं अनपढ़ थीं। पर्वतीय महिलाओं ने कई महत्वपूर्ण आंदोलनों में भागीदारी की है चाहे वह चिपको आंदोलन रहा हो या मदनिषेध आंदोलन, विश्वविद्यालय बनाने के लिए आंदोलन रहा हो या फिर उत्तराखंड आंदोलन परंतु इसके उपरांत भी उनकी जागरूकता का स्तर न्यून है। क्योंकि इन आंदोलनों में महिलाओं ने अपनी आवश्यकता की पूर्ति का स्रोत समझते हुए भागीदारी की थी, ना कि राजनीतिक जागृति के आधुनिक विचार हेतु। उनकी इस आंदोलन में भागीदारी राजनीतिक व्यवहार का एक असामान्य रूप है। व्यक्ति केवल उसी समय अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आंदोलन का सहारा लेता है जब वह अनुभव करता है कि कोई अन्य प्रभावशाली साधन उपलब्ध नहीं है।

उत्तराखंड आंदोलन में महिलाओं की राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता का

विश्लेषणात्मक अध्ययन-
उत्तराखंड आंदोलन में महिलाओं की राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता के स्तर को निम्न रूप में अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है।

महिलाओं की आयु संरचना तथा राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता

आयु मानव का महत्वपूर्ण हिस्सा है। राजनीतिक जागरूकता का संबंध व्यक्ति की राजनीतिक भागीदारी, उसके राजनीतिक रुझानों एवं राजनीतिक अभिरुचियों से होने के कारण आयु का उस पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। भारतीय समाज में अधिक आयु के व्यक्तियों को पारंपरिक रूप से सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। आयु बढ़ने के साथ ही मनुष्य का मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है। माना जाता है कि बुजुर्गों में परिणामों को पूर्व में ही भांप जाने की शक्ति होती है। क्योंकि अनेक अनुभवों से गुजरने के बाद उनके विचारों में परिपक्वता आ जाती है। राजनीतिक दृष्टि से भी आयु का विशिष्ट महत्व है। कुछ समय पूर्व तक ग्रामीण समुदायों में प्रायः अधिक आयु वाले व्यक्ति अनौपचारिकता के साथ-साथ पंचायत का भी नेतृत्व करते थे। उत्तराखंड आंदोलन में भी यही देखने को मिला इस आंदोलन में बुजुर्ग महिलाओं ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई। लगभग 55% महिलाएं ऐसी थी जो 50 साल से ऊपर की थी। इन बुजुर्ग महिलाओं का इस आंदोलन में कूदना संभवतः राजनीतिक जागृति की अपेक्षाकृत विचारों में परिपक्वता ही माना जाएगा।

महिलाओं का शैक्षिक स्तर तथा राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता

शिक्षा राजनीतिक समाजीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा के माध्यम से ही सामान्यतः व्यक्ति ग्रामीण परिवेश से बाहर निकलकर परिवर्तन के अभिकर्ताओं के संपर्क में आता है। शिक्षा व्यक्ति के लिए अत्यंत आवश्यक है किसी व्यक्ति की शिक्षा जितनी अधिक व्यापक होगी उतना ही वह सरकार की नीतियों के प्रति सजक होगा, तथा राजनीतिक समझ रखते हुए तभी वह उनका अनुसरण कर पाएगा। शिक्षित व्यक्ति अधिक से अधिक राजनीति के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकता है एवं उसमें राजनीतिक विषयों को प्रभावित करने की अधिक योग्यता होती है। यह तथ्य सर्वविदित है कि शिक्षित व्यक्ति सुगमता एवं शीघ्रता से योजना का निर्माण और निर्णय ले सकता है। क्योंकि व्यक्ति जितना अधिक शिक्षित होगा उतना ही वह राजनीतिक ज्ञान रखने में सक्षम होगा। परंतु उत्तराखंड आंदोलन एक अद्वितीय आंदोलन था। उसमें अनपढ़ महिलाओं की अविस्मरणीय भागीदारी अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है। इस आंदोलन में लगभग 52% महिलाएं अनपढ़ थी। अतः यह कहना अतिश्योक्ति न होगा कि पृथक पर्वती राज्य आंदोलन उन महिलाओं द्वारा संचालित किया गया था जिसमें राजनीतिक जागरूकता नाम मात्र की भी नहीं थी, इसके बावजूद कि इस आंदोलन में उनकी सहभागिता लगभग 52% तक रही। अतः यह कहा जा सकता है कि उनकी इस आंदोलन में सहभागिता भावनात्मक जोश या गुस्सा मात्र थी, जो उनके बेटे भाई या पति की पूर्ववर्ती सरकारों द्वारा वर्षों से की जा रही उपेक्षा तथा इस आंदोलन में बेगुनाहों की शहादत के कारण फूट पड़ी थी।

महिलाओं का आर्थिक स्तर तथा राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता

आर्थिक स्थिति व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। किसी भी समाज में सुविधाओं और साधनों पर उसी वर्ग का वर्चस्व होता है जो आर्थिक रूप से संपन्न हो। एक निर्धन व्यक्ति जो जीवन यापन हेतु निरंतर संघर्षरत रहता है वह ना ही सामाजिक सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाता है और ना ही शिक्षा एवं भौतिक सुविधाओं की प्राप्ति कर पाता है। वास्तव में नियमित मासिक आय उसकी स्थिति का एक महत्वपूर्ण निर्धारक होती है। आर्थिक शक्ति व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को प्रभावित करती है यह कहना उचित ही होगा कि आर्थिक शक्ति राजनीतिक शक्ति की भी जननी है, क्योंकि जीवन में मूलभूत आवश्यकताओं के पूर्ण होने पर ही कोई व्यक्ति समाज या राजनीति के बारे में सोच सकता है। आय और नेतृत्व में एक सकारात्मक एवं करीबी संबंध होता है। अतः यह भी कहा जा सकता है कि व्यक्ति का आर्थिक स्तर ही उसकी राजनीतिक जागृति एवं समानता का निर्धारण करता है, उत्तराखंड आंदोलन कुछ इसके विपरीत ही था उत्तराखंड आंदोलन में अपनी सड़क स्तर की सहभागिता देने वाली महिलाओं में लगभग 53% वह महिलाएं थी जिनकी मासिक आय मात्र 4000 थीं। इसके बावजूद भी महिलाएं घर बार चूल्हा चौका छोड़, दरांती हाथों में लिए सड़कों पर उतर आई, क्योंकि यह वर्ग सबसे अधिक पलायन एवं आर्थिक बोझ से दबा हुआ था। सड़कों पर उतरकर उन्होंने अपनी इस छटपटाहट को जाहिर किया था। कहा जा सकता है कि 4000 से कम पारिवारिक आय वाली महिलाओं की भागीदारी आंदोलन में सर्वाधिक रही जिसे जागृति की अपेक्षा विवशता ही अधिक माना जाएगा। संभवत इसका एकमात्र कारण यह है कि आर्थिक रूप से कमजोर आय वाली महिलाएं एवं राजनीतिक आंदोलन की पृष्ठभूमि में अपने आर्थिक सवालों के उत्तर को राजनीतिक हल के तौर पर तलाश रही थी।

महिलाओं का व्यवसाय तथा राजनीतिक जागृति एवं सहभागिता

व्यक्ति का दैनिक व्यवसाय वस्तुतः उसकी मानसिकता का निर्माण करता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यवसाय के माध्यम से अनेक अनुभवों को प्राप्त करता है। व्यवसायों के माध्यम से व्यक्ति में राजनीतिक विकास का उद्भव संभव है। भारत एक कृषि प्रधान देश है एवं यहां की महिलाएं कृषि कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अधिकांश उत्तराखंडी महिलाओं का व्यवसाय कृषि है। कृषि संबंधी लगभग सभी कार्य यहां की महिलाएं ही करती है यहां के खेतों का छोटा आकार सीढ़ीनुमा खेतों का इधर-उधर फैला होना एवं सिंचाई की समुचित व्यवस्था का अभाव यहां की महिलाओं के कष्टों को और अधिक बढ़ा देता है। परंतु इतना सब कुछ होने के बाद की अर्थव्यवस्था में उनके योगदान को गौण ही समझा जाता है। इस आंदोलन में कूदने वाली 59% महिलाएं गृहणी एवं कृषि कार्य से जुड़ी हुई थी। परंतु उनकी इस सहभागिता को जागृति कहना शायद उचित नहीं होगा क्योंकि ग्रहणी एवं कृषि कार्य से जुड़े अधिकांश महिलाएं अनपढ़ थी, उसके बावजूद भी उन्होंने इस आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई क्योंकि यह तबका सबसे अधिक आर्थिक परेशानियों से जूझ रहा था। उनका मानना था कि संभवत राज्य बनने के उपरांत उनकी स्थिति में सुधार होगा।

अतः हम कह सकते हैं कि राजनीतिक सहभागिता के लिए राजनीतिक जागरूकता का होना आवश्यक नहीं है राजनीतिक सहभागिता भावनात्मक भी हो सकती है। उसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण उत्तराखंड आंदोलन है जो राजनीतिक जागरूकता का नहीं बल्कि महिलाओं की भावनात्मकता का परिणाम था।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. भंडारी, राजकुमारी : उत्तराखंड आंदोलन में महिलाओं की भूमिका, अप्रकाशित शोध ग्रंथ।
2. जैन, पुखराज एंड फाडिया, बीएल : राजनीति समाजशास्त्र, साहित्य भवन, हॉस्पिटल रोड, आगरा।
3. बहुगुणाना : गढ़वाल में महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता, 1990, अप्रकाशित शोध ग्रंथ।
4. पांडे, साधना : शोषित नारी वर्ग- पर्वतीय क्षेत्र का एक अध्ययन, 1992 अप्रकाशित शोध ग्रंथ।
5. रौथण, नरबीर सिंह: पर्वतीय क्षेत्र के छात्रों में राजनीतिक जागरूकता : गढ़वाल के चमोली जिले का विशिष्ट अध्ययन, 1991 अप्रकाशित शोध ग्रंथ।
6. चौहान, दिगंबर सिंह: स्थानीय स्वशासन एवं महिला राजनीतिक सहभागिता : गढ़वाल जनपद का एक अध्ययन, 1993, अप्रकाशित शोध ग्रंथ।

7ण थपलियाल, देवकृष्ण: उत्तराखंड में पर्यावरण जन चेतना एवं राष्ट्रीय राजनीतिक जागरूकता, 2003।